५९: मंडल समूह परिवार सभा

दिनांक -२०-०२-२०१२

मंडल परिवार सभा में, जैसा पहले से परिवार सभाओं में निर्वाचन होते ही आया है उसी प्रकार १०-१० मंडल सभा से १-१ व्यक्ति का निर्वाचन होता है | फलस्वरूप मंडल समूह सभा के लिये १० निर्वाचित व्यक्ति उपलब्ध होंगे | इन दसों व्यक्तियों का अधिकार समान होगा | ये दसों व्यक्ति पांचों आयामों का समितियां गठित करेंगे | १० मंडलों में पाँचों समितियों का निरीक्षण, परीक्षण, सर्वेक्षण करने का अधिकार समान रहेगा | जहां कहीं भी कमी का अनुभव होगा, उसका सुधार के लिये समुचित सुझाव देने का प्रक्रिया को ज्ञानानुबंधित करने का अधिकार रहेगा | ज्ञानानुबंधित करने का तात्पर्य सह-अस्तित्व दर्शन ज्ञान, जीवन ज्ञान, मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान में पारंगत होने के अर्थ में है | इसमें जहां कहीं भी कमियां महसूस होंगी, उसका आपूर्ति के लिये ज्ञानार्जन कराने का अधिकार चेतना विकास मूल्य शिक्षा विधि से सम्पन्न रहेगा | इस क्रम में हर मानव अथवा हर नर-नारी समझदार होने की व्यवस्था सुलभ रहेगा | इसे सर्वेक्षण करने का अधिकार दसों सदस्यों में समान रूप से विद्यमान रहेगा | इसके साथ पांचों आयामों सहित हर सभा कार्यरत रहेगा एवं सम्पन्न रहेगा | इनमें कोई भी त्रुटियाँ समझ में आने पर उसे ठीक करने का अधिकार दसों व्यक्तियों में समान रहेगा | इसी के साथ पाँचों आयामों में गुणात्मक परिवर्तन का अधिकार समान रहेगा | इस क्रम में हर नर-नारी समझदार होने, समझदारी के फलन में समाधान को प्रमाणित करने के क्रम में हर नर-नारी में समानता का अनुभव करना और श्रमशीलता विधि से समृद्धि का अनुभव करने का अधिकार सम्पन्न रहेंगे | फलस्वरूप नर-नारी में समानता, गरीबी-अमीरी में संतुलन सहज रूप में वर्तमान रहता है | यही सर्वशुभ का स्वरूप है | इसी में गुणात्मक परिवर्तन विधि से अखण्ड समाज जो मानव जाति एक, मानव धर्म एक होने के आधार पर ही व्यवहार में एकरुपताहोने की व्यवस्था बनती है | फलस्वरूप मानव परम्परा भय-मुक्त होना सहज है |

अभी तक मानव जात जो ज्ञानी, विज्ञानी, अज्ञानी के नाम से जाना जाता है, सबका सब जंगल युग के जीवों के साथ किया गया का परिणाम, गुणात्मक विधि से आज भी मानव के साथ संघर्ष और युद्ध के रूप में परिणत है | जिसके फलस्वरूप सामरिक तंत्र में रत होने के आधार पर अखण्ड समाज बनना असम्भव है | विकल्प विधि के रूप में चेतना विकास मूल्य शिक्षा ही है जो मानव सम्मुख प्रस्तुत हो चुकी है | जिसका वांगमय रूप मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद है तथा मूल चिंतन अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन है, जिसे मानव सम्मुख प्रस्तुत कर चुके हैं | मानव इस पर विचार कर सकता है | इसके मूल में अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था ही बनती है | सार्वभौम व्यवस्था अपने आप में मानव का विकसित चेतना में जीने की विधि से प्रमाणित होता है | इसे अच्छी तरह से जीकर प्रमाणित कर चुके हैं | हर व्यक्ति इसे प्रमाणित कर निश्चय को प्राप्त कर सकता है | अध्ययन सुलभ रूप में प्रस्तुत होने के पक्ष में कार्य, व्यवहार प्रमाणों को सर्वसुलभ कराने के कार्यक्रम में हम व्यस्त हूँ | हम कहने के मूल में मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद के धारक-वाहकों के समूह से मतलब है | इस क्रम में हर मानव समझदार होने,फलस्वरूप सर्वतोमुखी समाधान होने, सर्वतोमुखी समाधानित होने के फलस्वरूप नर-नारी में समानता होने तथा श्रम पूर्वक समृद्धि को सफल एवं सम्पन्न करने का अधिकार हर नर-नारी में सुलभ होता है | इसी से समृद्धि का अनुभव होता है | हर परिवार में प्राकृतिक ऐश्वर्य पर श्रम नियोजन करने का कार्यक्रम में अवसर सुलभ रहता है | इस अर्थ में मानव समाधान, समृद्धिपूर्वक जीने का प्रमाण सर्व देश काल में उदय होना स्वाभाविक है |

आज का स्थिति में हर मानव कुछ किये बिना सब कुछ पाने का प्रयत्न करता है | इसका कारण के बारे में सोचने पर यही निकला कि राजा और राज्य कर्मचारी, धर्म एवं धर्म कर्मचारी बिना कार्य किये अर्थात अपना श्रम नियोजन को रासायनिक, भौतिक वस्तुओं पर नियोजित न करते हुए सब कुछ प्राप्त करने की विधि से अथवा सर्वमानव लोकतान्त्रिक विधि से आकर्षित हुआ जिससे श्रम नियोजन में विरक्ति तथा सब कुछ पाने में आसक्ति बढा है | इस मानसिकता को बलवती होने से लाभोन्माद, भोगोन्माद, कामोन्माद प्रभावी हुआ है | व्यक्तिवादी, समुदायवादी विचार के अनुसार हर समुदाय में दूसरे समुदाय के साथ कटुतापूर्वक पेश आने के लिये सामरिक तंत्र प्रभावी हो चुका है | इस ढंग से मानव सभी अवैध बातों को वैध मान चुका है | इस क्रम में सभी अवैध कार्यों का प्रभाव धरती पर होना देखा गया है | वन एवं खनिज का सन्तुलन से ऋतु संतुलन होना अध्ययनगम्य हो चुका है | इसे अस्तित्व सहज प्राकृतिक नियम सहज विधि से श्रम नियोजनपूर्वक प्राप्त कर सकते हैं; जिससे अखण्ड समाज का सूत्र बलवती होना स्वाभाविक है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

ए. नागराज